नमाज़ मे पढ़े जाने वाले कलिमात

जो अज़कार ओर कलिमात नमाज़ मे पढ़े जाते हें मषलन षना, अत्तह़िय्यात, दुरूद शरीफ, दुआ वग़ैरह इन को याद करने ओर सहीह करने के लिये अरबी ओर हिन्दी मे पेश किया गया हे, याद करने के बाद किसी माहिर आलिम को बारबार सुना कर अपनी अदाइगी की इस्लाह करवाऐं, ताके आप का पढ़ना दुरुस्त हो जाऐ। ओर साथ ही इस मे अज़कार का तरजमा भी लिख्खा गया हे, तरजमह मालूम होने से नमाज़ मे किसी क़दर हुज़ूरी की कैफियत नसीब होती हे। अल्लाह पाक हम सब को ख़ुशूअ ख़ुज़ूअ वाली कामिल नमाज़ पढ़ने की ओर पाबंदी के साथ पढ़ने की तौफिक़ अता फरमाऐ। आमीन।

11 रजब 1442 मुताबिक़ 24 फरवरी 2021 बरोज़ बुध

@AaajkeeTaaleem

मुफती असरारुल हक़ मज़ाहिरी

नमाज़ मे पढ़े जाने वाले कलिमात

षना

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ،

وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ ،

وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ ۔

सुब्ह़ानकल्लाहुम्म व बिह़म्दिक, व तबारकस्मुक, व तआला जद्दुक, व ला इलाह ग़ैरुक।

(सुनने तिर्मिज़ी)

(ऐ अल्लाह ! में आप की पाकी बयान करता हुं ओर आप की तारीफ करता हुं, आप का नाम बरकत वाला हे, ओर आप की शान बलंद हे, ओर आप के अलावा कोई माबूद नहीं)

मुफती असरारूल हक़ मज़ाहिरी

तशह्हुद (अत्तहिय्यात)

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ ، اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ، اَلسَّلَامُ
عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ ، اَشْهَدُ اَنْ لَّا
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۔

[अत्तह़िय्यातु लिल्लाहि वस़्स़लवातु वत़्त़यियबातु, अस्सलामु अलय्क अय्युहन्नबिय्यु व रह़्मतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अलय्ना व अला इबादिल्लाहिस़् स़ालिहीन, अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु, व अश्हदु अन्न मुह़म्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू]

(स़ही़हे मुस्लिम)

तरजमह

(तमाम ज़बानी इबादतें ओर बदनी इबादतें ओर माली इबादतें अल्लाह के लिये हे। आप पर सलामती हो ऐ नबी ! ओर अल्लाह की रहमत ओर उस की बरकात नाज़िल हों। हम पर सलामती हो ओर अल्लाह के नेक बंदों पर । में गवाही देता हुं के अल्लाह के सिवा कोई और माबूद नहीं, ओर गवाही देता हुं के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे ओर उस के रसूल हें)

@AaajkeeTaaleem

मुफ्ती असरारुल हक़ मज़ाहिरी

दुरूदे इब्राहीम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ ، اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ .
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ ، اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۔

अल्लाहुम्म स़ल्लि अला मुहम्मदिव् व अला आलि मुह़म्मदिन्, कमा स़ल्लय्त अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक ह़मीदुम् मजीद।
अल्लाहुम्म बारिक् अला मुह़म्मदिव् व अला आलि मुह़म्मदिन् , कमा बारक्त अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक ह़मीदुम् मजीद।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम)

तरजमह

(ऐ अल्लाह ! रह़मत नाज़िल फरमा मुह़म्मद ﷺ पर ओर मुह़म्मद ﷺ की अवलाद पर, जिस तरह आपने रह़मत नाज़िल फरमाई इब्राहीम अ.स. पर ओर इब्राहीम अ.स. की अवलाद पर, बेशक आप तारीफ के लाइक बड़ी बुज़ुर्गी वाले हैं। ऐ अल्लाह ! बरकत नाज़िल फरमा मुह़म्मद ﷺ पर ओर मुह़म्मद ﷺ की अवलाद पर, जिस तरह आपने बरकत नाज़िल फरमाई इब्राहीम अ.स. पर ओर इब्राहीम अ.स. की अवलाद पर, बेशक आप तारीफ के लाइक बड़ी बुज़ुर्गी वाले हैं।)

मुफती असरारूल ह़क़ मज़ाहिरी

दुआए माषूरह

اَللّٰهُمَّ اِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا ،

وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ ، فَاغْفِرْ

لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ ، وَارْحَمْنِيْ ،

اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ـ

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ्सी ज़ुल्मन् कषीरा, व ला यग़्फिरुज़ ज़ुनूब इल्ला अन्त, फग़्फिर्ली मग़्फिरतम् मिन् इन्दिक, वर्ह़म्नी, इन्नक अन्तल् ग़फ़ूरुर्रह़ीम।

(सह़ीह़े बुख़ारी)

(ऐ अल्लाह ! बेशक मेंने अपने उपर बहोत ज़ुल्म किया हे, ओर आप के सिवा ओर कोई गुनाहों को नहीं बख़्शता, पस आप मेरी मुकम्मल मग़्फिरत फरमा दीजिये अपने पास से, ओर मुझ पर रह़म फरमा दीजिये, बेशक आप ही बड़े मुआफ करने वाले बड़े रहम करने वाले हें)

मुफती असरारूल हक़ मज़ाहिरी

दुआए क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ ، وَنَسْتَغْفِرُكَ ، وَنُؤْمِنُ بِكَ ، وَنَتَوَكَّلُ
عَلَيْكَ ، وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ ، وَنَشْكُرُكَ ، وَلَا نَكْفُرُكَ ،
وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ، اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ ، وَلَكَ
نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ ، وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ ، وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ ،
وَنَخْشٰى عَذَابَكَ ، اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌّ ۔

अल्लाहुम्म इन्ना नस्तईनुक, व नस्तग़्फ़िरुक, व नुअमिनु बिक, व नतवक्कलु अलय्क, व नुष्नी अलय्कल् ख़ैर, व नश्कुरुक व ला नक्फ़ुरुक, व नख़्लउ व नतरुकु मय्यफ्जुरुक। अल्लाहुम्म इय्याक नअबुदु, व लक नुसल्ली व नस्जुदु, व इलय्क नस्आ व नह्फ़िदु, व नर्जू रह्मतक, व नख़्शा अज़ाबक, इन्न अज़ाबक बिल्कुफ्फारि मुल्हिक़।

तरजमह

(ऐ अल्लाह ! हम आप से मदद चाहते हैं, ओर आप से मग़्फिरत तलब करते हैं, ओर आप पर ईमान लाते हैं, ओर आप पर भरोसा रखते हैं, ओर आप की अच्छी तारीफ करते हैं, ओर आप का शुक्र अदा करते हैं, ओर आप की नाशुक्री नहीं करते, ओर जो आप की नाफरमानी करता हे उस को अलग करते हैं ओर छोड़ देते हैं। ऐ अल्लाह ! आप ही की हम इबादत करते हैं, ओर आप ही के लिये हम नमाज़ पढ़ते हैं ओर सजदह करते हैं, ओर आप ही की तरफ हम दोड़ते हैं ओर झपटते हैं, ओर आप की रहमत की हम उम्मीद रखते हैं, ओर आप के अज़ाब से हम डरते हैं, बेशक आप का अज़ाब काफिरों को पहोचने वाला हे)

@AaajkeeTaaleem

मुफती असरारुल हक़ मज़ाहिरी

क़ौमह की तस्बीह

यानी नमाज़ मे रुकूअ से उठने के बाद सजदह से पेहले पढ़ने की तस्बीह।

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ ،

حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيهِ -

रब्बना व लकल्ह़म्दु,

ह़म्दन् कषीरन् त़य्यिबम् मुबारकन् फीह।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी)

तरजमह

(ऐ हमारे रब ! ओर आप ही के लिये तारीफ हे, ऐसी तारीफ जो बहोत ज़ियादह पाकीज़ह बाबरकत हे)

@AaajkeeTaaleem

मुफती असरारुल हक़ मज़ाहिरी

जल्से की दुआ

यानी नमाज़ मे दो सजदों के दरमियान
बेठे हुवे पढ़ने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ، وَارْحَمْنِيْ ،
وَعَافِنِيْ ، وَاهْدِنِيْ ، وَارْزُقْنِيْ -

अल्लाहुम्मग़्फिर्ली, वर्ह़म्नी,
वआफिनी, वह्दिनी,
वर्ज़ुक़्नी।

(सुनने अबू दाऊद)

तरजमह

(ऐ अल्लाह ! मेरी मग़्फिरत फरमा दीजिये,
ओर मुझ पर रह़म फरमा दीजिये, ओर मुझे
आफियत दीजिये, ओर मुझे हिदायत दीजिये,
ओर मुझे रोज़ी दीजिये)

मुफती असरारूल हक़ मज़ाहिरी

तकबीर

اَللّٰهُ اَکْبَرْ

अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह सब से बड़ा हे)

तस्मीअ

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ ۔

समिअल्लाहु लिमन् ह़मिदह।

(अल्लाह ने उस की बात सुन ली जिस ने उस की तारीफ की)

रुकूअ की तस्बीह

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ ۔

सुब्ह़ान रब्बियल् अज़ीम।

(अज़मत वाला मेरा रब पाक हे)

सजदे की तस्बीह़

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی ۔

सुब्ह़ान रब्बियल् अअला

(बुलंद शान वाला मेरा रब पाक हे)

सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ۔

अस्सलामु अलय्कुम व रह़्मतुल्लाह।

(सलामती हो तुम पर ओर अल्लाह की रह़्मत)

@AaajkeeTaaleem

मुफती असरारूल हक़ मज़ाहिरी